झारखंड विधानसभा चुनाव

सवाल ये है कि वीडियो में ऐसा क्या था जिस पर चुनाव आयोग भी फटाफट एक्शन मोड में आ गया?

क्या झारखंड में 'घुसपैठिये' बीजेपी को दोबारा सत्ता में ला पाएंगे?

● मंथन संवाददाता

नई दिल्ली। 16 नवंबर की रात को झारखंड बीजेपी ने सोशल साइट एक्स पर एक वीडियो पोस्ट किया था। झारखंड में सनाधारी झारखंड मुक्ति मोर्चा और 'इंडिया' ब्लॉक में उसकी गठबंधन सहयोगी कांग्रेस ने वीडियो के खिलाफ चुनाव आयोग में शिकायत दर्ज कराई थी। खास बात ये है कि 17 नवंबर की शाम तक यानी कुछ घंटों में ही शिकायत पर एक्शन भी हो गया, और बीजेपी ने वीडियो डिलीट भी कर दिया। चुनाव आयोग के निर्देश पर पुलिस ने भी स्क्रुक्रदर्ज की है।

चुनाव आयोग से की गई शिकायत में बीजेपी पर भ्रामक बातें करने, समाज को बांटने की कोशिश करने और आदर्श चुनाव आचार संहिता का उल्लंघन करने का भी आरोप लगाया गया था - और चुनाव आयोग ने जेएमएम और कांग्रेस की

शिकायत को सही मानते हुए सख्त हिदायतें जारी कर दी। सवाल ये है कि वीडियो में ऐसा क्या था जिस पर चुनाव आयोग भी फटाफट एक्शन मोड में आ गया?

और सवाल ये भी है कि चुनाव आयोग के एक्शन से बीजेपी को नुकसान और शिकायत दर्ज कराने वालों जेएमएम और कांग्रेस को कोई फायदा भी हुआ क्या?

क्या था वीडियो में, और शिकायत में वीडियो असल में बीजेपी के घुसपैठिया कैंपेन का हिस्सा था। वीडियो में एक घर दिखाया गया था जहां हेमंत सोरेन से मिलती जुलती एक तस्वीर टंगी हुई थी। वीडियो के जरिये उसे झारखंड मुक्ति मोर्चा के कार्यकर्ता का घर दिखाने की कोशिश की गई है, जहां अचानक काफी सारे घुसपैठिये पहुंच जाते हैं, और कहते हैं कि आगे से वे वहीं रहेंगे।

झारखंड बीजेपी के वीडियो वाले पोस्ट के साथ चुनाव आयोग को टैग करते हुए ,जेएमएम ने सोशल साइट एक्स पर ही काफी तीखे सवाल किये, क्या देश में अब ऐसे चुनाव होगा? हिंदू-मुस्लिम के नाम पर आप देश को कितना गिरने देंगे? अब थोड़ी शर्म करके जांच जाइए।।। थोड़ी हिम्मत दिखाइये, बीजेपी ने निर्लज्जता, ओछापन की सारी सीमाएं लांघ दी है।

जेएमएम महासचिव विनोद पांडेय की तरफ से चुनाव आयोग को दी गई शिकायत में कहा गया था, आचार संहिता उल्लंघन कर किये जा रहे हैं। ऐसे प्रचार को तत्काल बंद कर कार्रवाई की जाये। जेएमएम की शिकायत थी कि बीजेपी के आधिकारिक एक्स हैंडल पर चुनाव आचार संहिता का उल्लंघन करते हुए पोस्ट किये जा रहे हैं। जेएमएम की ही तरह कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने भी वीडियो के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई थी।

शिकायत को गंभीर मानकर एक्शन लेते हुए चुनाव आयोग ने झारखंड के मुख्य चुनाव अधिकारी को कई निर्देश जारी किये। झारखंड बीजेपी को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से वीडियो हटाने की हिदायत के साथ ही आदर्श आचार संहिता के प्रावधानों के उल्लंघन को लेकर नोटिस देकर जवाब मांगा गया है। पुलिस ने भी एफआईआर दर्ज कर ली है।

घुसपैठियों का मामला चुनावी मुद्दा बना क्या

बीजेपी झारखंड में बांग्लादेशी घुसपैठियों को चुनावी मुद्दा बनाने की कोशिश में पहले से ही जुट गई थी, और उसे हवा मिली यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के आगम में दिये गये स्लोगन से - बटेंगे तो कटेंगे। योगी आदित्यनाथ की ही तरह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और बीजेपी नेता अमित शाह ने भी घुसपैठियों का मामला जोर शोर से उठाया। बीजेपी अध्यक्ष जेपी नड्डा ने तो घुसपैठियों का आधार कार्ड और वोटर आई तक बनवा डालने का आरोप जेएमएम नेता हेमंत सोरेन और उनकी सरकार पर लगाया। एक रैली में जेपी नड्डा लोगों को अपने हिसाब से समझा रहे थे, 'अभी मुझे खुफिया रिपोर्ट मिली है... उसमें कहा गया है कि यहां बांग्लादेशी घुसपैठियों को मदरसों में शरण दी जाती है... उनके लिए आधार कार्ड, वोटर कार्ड, गैस कनेक्शन हासिल करना आसान बनाया गया है।

नागा और कुकी समुदाय के बीच तनाव तब बढ़ा जब नोनी जिले में दो ट्रकों को आग के हवाले कर दिया गया

मणिपुर में एक अक्टूबर से करीब 16 जगहों पर हुई हिंसा, अब नागा प्रभाव वाले इलाकों में भी तनाव

● मंथन संवाददाता

नई दिल्ली। मणिपुर में एक बार फिर स्थिति नियंत्रण के बाहर जा रही है। ताजा हिंसा में विधायकों और मंत्रियों के घरों को निशाना बनाया गया है। स्थिति पर कंट्रोल के लिए सरकार ने करीब 5,000 अतिरिक्त केंद्रीय सुरक्षा बलों को तैनात किया है। 7 नवंबर को जिरीबाम जिले के जैरवन गांव में हमार समुदाय की एक महिला की हत्या हुई थी। इसके बाद हिंसा भड़क उठी थी। एक रिपोर्ट के अनुसार, 1 अक्टूबर से 18 नवंबर के बीच कम से कम 16 अलग-अलग हिंसा की घटनाओं में हत्याएं, आगजनी और जिरीबाम जिले में भारी गोलीबारी के साथ मुठभेड़ें हुई हैं। जिरीबाम में ही 7 नवंबर से 18 नवंबर के बीच कम से कम 20 लोग मारे गए। इस दौरान हमलावरों ने एक परिवार से छह लोगों का अपहरण भी किया था, जिनकी बाद में हत्या कर दी गई। उनके शवों को असम से बरामद किया गया। ये मृतक मैतई समुदाय से थे।

नागा क्षेत्रों में भी हिंसा: मणिपुर में करीब 19 महीने से तनाव जारी है, लेकिन नागा जनजातियों वाले इलाकों में अभी तक हिंसा की आंच नहीं पहुंची थी। लेकिन अब हिंसा धीरे-धीरे नागा क्षेत्रों में भी फैलने लगी है। नागा और कुकी समुदाय के बीच तनाव तब बढ़ा जब इस महीने की शुरुआत में नोनी जिले में दो ट्रकों को आग के हवाले कर दिया गया, जिसे कथित तौर पर कुकी मिलिटेंट्स ने किया था। वहीं, 2 अक्टूबर को उखरुल जिले में नागा बहुल क्षेत्र में दो गांवों के बीच संघर्ष के बाद, एक पुलिस शस्त्रागार को लूटा गया, जिसमें कम से कम चार लोग मारे गए और 40 अन्य घायल हो गए। इस बीच, नागा समुदाय में एक प्रमुख समूह नेशनल सोशलिस्ट कांउसिल ऑफ नागालैंड (आई-एम), जिसे मणिपुर के पहाड़ी इलाकों में समर्थन प्राप्त है। उन्होंने पिछले साप्ताह केंद्र सरकार को धमकी दी कि अगर केंद्र उनके अलग झंडे और संविधान के लिए किए गए प्रस्तावों पर सहमत नहीं होता, तो वे 1997 के संघर्ष विराम समझौते से बाहर निकल सकते हैं।

उप चुनाव

अखिलेश बोले, यूपी के भविष्य का रुख तय करेंगे चुनाव, यूपी उपचुनाव को बताया रुख चुनाव

आजादी के बाद का सबसे कठिन उपचुनाव... वोटिंग से ठीक पहले वोटर्स से ऐसा क्यों बोले अखिलेश यादव

● मंथन संवाददाता

लखनऊ। समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव ने उत्तर प्रदेश में होने वाले उपचुनावों को 'रुख चुनाव' करार दिया है। उन्होंने पीडीए (पिछड़ा, दलित, अल्पसंख्यक) मतदाताओं से एकजुट होकर इन चुनावों में भाजपा को हराने का आह्वान किया है। अखिलेश ने कहा कि आजादी के बाद यह देश का सबसे कठिन उपचुनाव है।

उत्तर प्रदेश में 9 सीटों पर होने वाले उपचुनाव से पहले सपा मुखिया अखिलेश यादव ने पीडीए मतदाताओं को एकजुट होने की अपील की है। उन्होंने इस उपचुनाव को सबसे कठिन उपचुनाव बताते हुए कहा कि ये रुख चुनाव है, जो प्रदेश के भविष्य का रुख तय करेंगे। उन्होंने लोकसभा चुनाव की तरह उपचुनाव में भी संविधान बचाने के लिए पीडीए की एकजुटता पर जोर दिया और नारा दिया कि पीडीए का परचम पूरे देश में लहराएगी और अपनी सरकार बनाएंगे।

अखिलेश ने एक्स पर पोस्ट करते हुए लिखा, 'प्रिय उत्तर प्रदेश वासियों और मतदाताओं, उत्तर प्रदेश आज़ादी के बाद के सबसे कठिन उपचुनावों का गवाह बनने जा रहा है। ये उपचुनाव नहीं हैं, ये रुख़ चुनाव हैं, जो उप्र के भविष्य का रुख़ तय करेंगे। इन उपचुनावों में, लोकसभा 2024 के चुनावों की तरह भाजपा की नकारात्मक राजनीति को फिर से धूल चटाने और संविधान, लोकतंत्र, आरक्षण व सामाजिक न्याय के संघर्ष को बचाने के लिए पूरा पीडीए समाज सभी 9 सीटों पर एकजुट है।'

पीडीए लामबंद है: अखिलेश

अखिलेश ने आगे लिखा, 'भाजपाई महँगाई, बेरोज़गारी-बेकारी, भ्रष्टाचार और नफ़रत की राजनीति से मुक्ति के लिए पीडीए फिर से लामबंद है क्योंकि अब उसके सामने एक स्पष्ट लक्ष्य है और वो है भविष्य में 'अपनी सरकार बनाना' मतलब 'पीडीए सरकार बनाना'। अब तक पीडीए ने औरों को सरकार बनाई है, अब पीडीए भविष्य में अपनी सरकार बनाएगा, जिससे अपने हक़ और अधिकार को पाया जा सके।'

सपा मुखिया ने लिखा, 'उत्तर प्रदेश का हर युवक-युवती, हर किसान-मज़दूर, हर दुकानदार-कारोबारी, हर कलाकार-खिलाड़ी, हर ग़रीब, दलित, पिछड़ा, अल्पसंख्यक, आदिवासी और आधी आबादी के प्रतिनिधि के रूप में हर लड़की, हर नारी और 'अगड़ों में पिछड़े', हर शोषित व वंचित समाज के लोग मतलब पूरा पीडीए समाज अब हर गाँव-गली में अपनी आवाज़ बुलंद करते हुए कह रहा है: पीडीए का परचम पूरे देश में लहराएँगे, अपनी सरकार बनाएँगे।' उन्होंने मतदाताओं से सौ फीसदी तदान करने की अपील की और सावधान रहने को भी कहा। अखिलेश ने कहा, 'जब तक हार में जीत का प्रमाण नहीं, तब तक विश्राम नहीं!'

राधाकिशन दमानी की कामयाबी की कहानी, डी-मॉर्ट के मालिक दुनिया के 100 अमीरों में हुए शामिल, 12वीं पास शख्स की नेटवर्थ 35 साल में हुई 1.42 लाख करोड़

कम भाव में शॉसरी का सामान खरीदना हो तो हममें से ज्यादातर लोगों की पहली पसंद डी-मार्ट होता है। इसकी शुरुआत 2002 में मुंबई के पवई इलाके से हुई थी। आज देशभर में कंपनी के 238 स्टोर्स हैं। सफलता की कहानी गढ़ने वाली इस कंपनी को एक सफल निवेशक ने बनाया, जिन्हें शेयर बाजार के बिग बुल राकेश झुनझुनवाला भी अपना गुरु मानते हैं। लाइमलाइट से कोसों दूर रहने वाले इस बिजनेसमैन का नाम 'राधाकिशन दमानी' है। अस्सी के दशक में शेयर बाजार में 5000 रुपए के साथ उतरे दमानी की नेटवर्थ आज 1.42 लाख करोड़ रुपए हो गई है। ब्लूमबर्ग बिलेनियर्स इंडेक्स के मुताबिक इस समय वे दुनिया के 98वें सबसे अमीर शख्स हैं।

5000 रुपए से शुरू की शेयर ट्रेडिंग

1985-86 में पिता शिवकिशन दमानी की मौत के बाद उन्होंने घाटे में चल रहे बॉल बेयरिंग बिजनेस को बंद किया। इनके पिता शेयर ब्रोकर थे, तो बचपन से ही मार्केट की थोड़ी समझ थी। भाई गोपीकिशन दमानी के साथ मिलकर पूरा फोकस शेयर मार्केट पर किया। 5000 रुपए से निवेश की शुरुआत की और आज दुनिया के सबसे अमीरों की लिस्ट में 98वें पायदान पर पहुंच गए।

हर्षद मेहता घोटाले के बाद हुआ भारी प्रॉफिट

इस दौरान उन्होंने 1992 में हुए हर्षद मेहता घोटाले का दौर भी देखा। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक उस समय दमानी ने एक बात कही थी 'अगर हर्षद मेहता सात दिन और अपनी लॉन्ग पोजीशन होल्ड कर लेता, तो मुझे कटोरा लेकर सड़क पर उतरना पड़ता।' ऐसा उन्होंने इसलिए बोला था क्योंकि हर्षद मेहता ने शेयर बाजार में तेजी पर दांव लगाया था, जबकि दमानी ने बाजार के गिरने पर दांव लगाया था। लेकिन घोटाले की बात सामने आते ही बाजार धड़ाम से गिरा, जिससे दमानी को जबर्दस्त प्रॉफिट हुआ। दमानी के लिए बतौर निवेशक 1995 का साल अच्छा रहा। जहां निवेशक सरकारी बैंकों में पैसा लगा रहे थे, वहीं दमानी ने 'सस्ते वैल्युएशन में मिलने वाली कंपनी में लंबे वक्त तक रुकने' का फॉर्मूला अपनाते हुए एचडीएफसी बैंक के आईपीओ में पैसा लगाया। इससे उन्होंने जमकर पैसा बनाया।

2002 में शुरू किया पहला डीमार्ट स्टोर

1999 में उन्होंने नई मुंबई के नेरूल में अपना बाजार की एक फ्रेंचाइजी की शुरूआत की, पर उन्हें यह मॉडल जमा नहीं। आगे चलकर 2002 में मुंबई के पवई इलाके में डीमार्ट का पहला स्टोर खोला। अब देशभर में कंपनी के 238 स्टोर्स हैं।

डीमार्ट में मार्जिन के बजाय ज्यादा वॉल्यूम पर फोकस: अब अगर डीमार्ट की सफलता के फॉर्मूला को समझें तो कंपनी ने रिटेल कारोबार में ने केवल लोक से हटकर अपनी पहचान बनाई है बल्कि सफलता के झंडे भी गाड़े। इसके पीछे कंपनी का सीधा सा फंडा है, मार्जिन के बजाय वॉल्यूम पर फोकस। सफलता का आलम यूं है कि कंपनी अपने सप्लायर को 7-10 दिन में पेमेंट कर देती है। जबकि इसी सेगमेंट की अन्य कंपनियां सप्लायर को 20-30 दिन में पेमेंट करती हैं। खास बात यह है कि कंपनी जहां भी अपने स्टोर्स खोलती है, वह स्टोर डीमार्ट का ही होता है। यानी स्टोर्स को किराए पर नहीं लेती।

ईरान को आर्थिक तौर पर तोड़ने के लिए ट्रंप ने अपने नए प्रशासन में ईरान विरोधी लोगों को बड़ी जिम्मेदारी सौंपी है

ईरान में तख्तापलट का प्लान बना रहे ट्रंप! अमेरिका के 'सीक्रेट प्लान' से मिडिल ईस्ट में मची खलबली

● मंथन विदेश ब्यूरो

न्यूज डेस्क। अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में डोनाल्ड ट्रंप की जीत के बाद पश्चिम एशिया में खलबली मच गई है। एक समाचार पत्र ने इजरायली अधिकारियों का हवाला देते हुए खुलासा किया कि ट्रंप के करीबी ईरान के सुप्रीम लीडर अली खामेनई शासन के तख्तापलट की रणनीतिक योजना बना रहे हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि ईरानी राष्ट्रपति मसूद पेजशकियन दुनिया के लिए लिबरल चेहरा है, लेकिन ईरान की बागडोर सुप्रीम लीडर अली खामेनई के हाथ में हैं। खामेनई लगातार अमेरिका को चुनौती दे रहे हैं।

अमेरिका का लक्ष्य- इजरायल में शांति स्थापित करना

सूत्रों के हवाले से कहा अमेरिकी योजना बना रहा है कि इजरायल में शांति स्थापित कर ईरान की ताकत को कम किया जाए। बता दें कि पिछले कार्यकाल में ट्रम्प ने ईरान से परमाणु समझौता खत्म किया और उस पर प्रतिबंध लगाए थे। ट्रम्प ने 3 जनवरी 2020 को कुद्स फोर्स के चीफ जनरल कासिम सुलेमानी की हत्या का आदेश दिया था। तब से ईरान ट्रम्प को अपना कट्टर दुश्मन मानता है।

ईरान के खिलाफ ट्रंप ने तैयार किया प्लान

ईरान को आर्थिक तौर पर तोड़ने के लिए ट्रंप ने अपने नए प्रशासन के मंत्रिमंडल में ईरान विरोधी लोगों को बड़ी जिम्मेदारी सौंपी है। ट्रंप ने माइक वाल्ट्ज को राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार और अरकांसास के पूर्व गवर्नर माइक हकबी को इजराइल में राजदूत नियुक्त किया है। वहीं, ट्रंप ने फॉक्स न्यूज के होस्ट, लेखक पीट हेगसेथ को रक्षा सचिव नियुक्त किया है। हेगसेथ ने ईरान की परमाणु केंद्रों पर हमले के लिए करने के लिए इजराइल की स्वायत्तता देने की वकालत की है।

ट्रंप पर निशाना बना चुका है ईरान

अमेरिकी चुनाव प्रचार के दौरान ट्रंप ने ईरान पर उनकी हत्या कराने की साजिश का आरोप लगाया था। ईरान की रिवोल्यूशनरी गार्ड्स के एक अधिकारी ने सितंबर में एक भाड़े के शूटर को ट्रंप मारने की योजना बनाने का निर्देश दिया था। इफ्तहाद शकेरी नाम के शख्स को ट्रंप की हत्या का जिम्मा सौंपा गया था। रिपोर्ट में कहा गया कि राष्ट्रपति पद संभालते ही ट्रंप ईरान के खिलाफ एक्शन मोड में नजर आ सकते हैं।